

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बढकारियाँ ही हमारी उपीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

गरीबी से मुक्ति हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति व पर्यावरण से बेहतर कोई उपाय नहीं

यजुर्वेद संहिता का एक महत्वपूर्ण सूत्र है: दारिद्र्यपाशाद्गुरुतो न दुःखम्, शिक्षारोग्येणविमुक्तिरिष्टा। शान्तिप्रकृत्यासहिता च सिद्धिः, नास्त्वत्रमार्गोऽपरतोहिश्रेष्ठः।। तात्पर्य यह है कि गरीबी के बंधन से बड़ा कोई दुःख नहीं है। शिक्षा और स्वास्थ्य से ही वांछित मुक्ति प्राप्त होती है। शांति और प्रकृति के साथ सिद्धि प्राप्त होती है। इससे बेहतर कोई और मार्ग नहीं है। इसी बात को यहाँ और भी स्पष्ट किया गया है: दारिद्र्यादधिकः निःसन्देहंनान्ति, तस्वविमुक्तयेश्विशारोग्यशान्तिपर्यावरणानि श्रेष्ठानि साधनानि, अन्येषांन्यूनत्वात्। तात्पर्य यह है कि गरीबी से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है, और उससे मुक्ति दिलाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण से श्रेष्ठ कोई उपाय नहीं देखा जाता। आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

मेरा जीवन एक साधारण गाँव में शुरू हुआ जहाँ अकूत गरीबी थी। मेरे पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे और मैं प्रायः उनको इस संघर्ष में देखता था कि कैसे वे एक ओर अपने विद्यार्थियों को आगे बढने के लिए प्रेरित करते थे और दूसरी ओर सरकारी अफसरों और नेताओं से हाथ जोड़कर अपने पदस्थापन स्थान के विकास के लिए याचना करते थे। मैंने तब इस बात को स्वयं जिया कि कैसे गरीबी न केवल जीवन की गुणवत्ता को कम करती है, बल्कि यह व्यक्ति की आत्मा को भी छलनी कर देती है। इस अभिशाप से मुक्ति पाने की छटपटाहट में मैंने शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण के महत्व को आत्मसात और क्रियान्वित किया।

शिक्षा ने मेरे लिए विश्व के बंद दरवाजे खोले। शिक्षा मेरे लिए ज्ञान की वह रोशनी लेकर आई, जिसने मुझे अपनी स्थितियों को समझने और उन्हें बदलने की रणनीति और शक्ति दी। स्वास्थ्य ने मुझे यह सिखाया कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ और निर्मल मन निवास करता है, और यही निर्मल मन व्यक्ति के समग्र कल्याण का बीज है। शांति ने मुझे आंतरिक संतुलन और सामंजस्य के चमकारी प्रभाव को समझाया, जो हमारे भीतर सहयोग और सद्भावना को बढ़ाता है। हमारे आसपास का पर्यावरण और उसको बेहतर रखने से मुझे यह समझ पाना सुलभ हुआ कि प्राकृतिक संसाधन हमारे जीवन केमूल आधार हैं, और इनकी सुरक्षा करना हमारी असल में हमारी अपनी भलाई के लिए अनिवार्य है।

इस प्रकार, मेरी कहानी आपको यह सिखा सकती है कि गरीबी से लड़ने और विजय पाने हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति, और पर्यावरण कोसाथ लेकर चलना होगा। ये चारों स्तंभ व्यक्तिगत जीवन के साथ ही समग्र समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। जब हम इन स्तंभों को सशक्त बनाते हैं, तो हम न केवल गरीबी के विरुद्ध एक प्रबल लड़ाई लड़ सकते हैं, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव रख सकते हैं जो अधिक समृद्ध, स्वस्थ, और शांतिपूर्ण हो।

अपनी जीवन यात्रा में मैंने यह भी सीखा कि जब समाज एक साथ मिलकर काम करता है, तो बदलाव लाना तुलनात्मक रूप से शीघ्रतापूर्वक संभव हो पाता है। शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना, शांति की दिशा में काम करना, और पर्यावरण की रक्षा करना—ये सभी कार्य तब और अधिक प्रभावी होते हैं जब हम सभी इसमें साझा प्रयत्न करते हैं। मेरी कहानी यह भी दर्शाती है कि गरीबी एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसे पराजित करने के लिए हमारे पास शक्तिशाली रणनीतियाँ उपलब्ध हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति, और पर्यावरण के माध्यम से हम व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बना सकते हैं, और साथ ही पूरे समाज और राष्ट्र को भी उन्नित की ओर ले जा सकते हैं। इस दिशा में मिलजुल कर किया गया कार्य एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा सकता है जहाँ गरीबी मात्र इतिहास का हिस्सा बन कर रह जाए।

शिक्षा और कौशल का महत्व तो जगजाहिर है। इससे न केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त होते हैं, बल्कि उसे आत्मनिर्भरता की एक महत्वपूर्ण शक्ति है। एक अनपढ़ व्यक्ति जो अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होता है, उसे प्रायः शोषण का सामना करना पड़ता है। जब वही व्यक्ति शिक्षित हो जाता है, तो वह न केवल अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है, बल्कि अपने जीवन की बेहतररीहेतु सही निर्णय ले सकता है।

शिक्षा के साथ ही स्वास्थ्य भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य साधन है। बीमारियों से मुक्त एक स्वस्थ व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सक्षम होता है और तुलनात्मक रूप से अधिक आय अर्जित कर सकता है। इसके उलट, एक बीमार व्यक्ति अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर सकता, जिससे

यह आवश्यक है कि हम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, और शांति के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा दें और इन्हें अपनी राष्ट्रीय नीतियों का केंद्र बिंदु बनाएं। इस प्रकार, हम एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर होंगे जहाँ हर नागरिक के पास अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने का अवसर होगा।

शान्ति को बढ़ावा देना और आपसी संघर्षों को कम करना गरीबी से मुक्ति के लिए अनिवार्य है।

गरीबी को मिटाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और शांति के साथ-साथ पर्यावरण का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरणीय स्थिरता से हमारे संसाधन सुरक्षित रहते हैं, जो कि सतत आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिकीय विकास और लोगों के कल्याण में मौलिक भूमिका निभाते हैं। जब पर्यावरण संरक्षित होता है, तो यह खाद्य सुरक्षा में योगदान देता है, प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करता है, और स्वच्छ जल, वायु और मृदा प्रदान करता है। इस प्रकार, पर्यावरणीय स्थिरता प्राकृतिक पारिस्थितिकीय तंत्रों के साथ ही मानव समाज के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता के लिए भी अनिवार्य है। इसलिए, गरीबी उन्मूलन की हमारी रणनीतियों में पर्यावरणीय संरक्षण को भी प्रमुख स्थान देना चाहिए। प्राकृतिक जलवायु समाधान जिसमें कार्बन पृथक्करण और संचय, जैव-विविधता का संरक्षण, और आजीविका में सुधार शामिल हैं, एक ऐसा रास्ता देते हैं जो गरीबी उन्मूलन के लिए आवश्यक संसाधनों का सुदृढीकरण भी करते है।

इन चारों स्तंभों – शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण – को सुदृढ़ करने से ही गरीबी के चक्र को तोड़ा जा सकता है और एक समृद्ध समाज की नींव रखी जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सरकारें और समाज के सभी वर्ग इन क्षेत्रों में प्राथमिकता से निवेश करें। इन मूलभूत कारकों को सम्हाले बिना गरीबी के विरुद्ध एक प्रभावी और निर्णायक लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती।

यदि एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन नहीं दे सकता, तो वास्तव में उसके पास देश के लिए और क्या बचता है? ये सभी तत्व न केवल एक समृद्ध समाज की नींव हैं, बल्कि ये हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण हैं। एक व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के रूप में हमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम इन मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करें और अपने नागरिकों को एक सुरक्षित, स्वस्थ, और शिक्षित भविष्य प्रदान करें। यदि हमारा देश अपने नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को तो बढ़ाएगा ही साथ ही समाज के समटा विकास को भी सुनिश्चित करेगा। इन मूलभूत कारकों को ध्यान रखकर तय की गई प्राथमिकता ही वह आधार है जिस पर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है।

इस विश्लेषण में हम आने वाले समय में यह स्पष्ट करेंगे कि कैसे शिक्षा नागरिकों को नई तकनीकें और विचार सीखने में मदद कर सकती है, स्वास्थ्य सेवाएं कैसे उन्हें अधिक उत्पादक बना सकती हैं, पर्यावरणीय संरक्षण कैसे संसाधनों की रक्षा कर सकता है, और शांति कैसे हमारे समाज को अधिक सहयोगी और सद्भावपूर्ण बना सकती है। हम उम्मीद करते हैं कि इस विश्लेषण के माध्यम से प्राप्ानिष्कर्ष समाज और सरकारों को इन क्षेत्रों में नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे गरीबी कम होने के साथ ही देश की समग्र प्रगति भी सुनिश्चित होगी।

हम इस श्रृंखलाबद्ध विश्लेषण को इस आशा और विश्वास के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि यह ज्ञान, गरीबी को मिटाने के लिए समाज और सरकारों को एक नई दिशा देगा। जब एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करता है। ये सभी तत्व एक समृद्ध समाज की नींव हैं और हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। इससे न केवल हमारे देश की समग्र उन्नति सुनिश्चित होगी, बल्कि यह हमारे नागरिकों को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और सक्षम बनाने में भी मदद करेगा। यह आवश्यक है कि हम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, और शांति के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा दें और इन्हें अपनी राष्ट्रीय नीतियों का केंद्र बिंदु बनाएं। इस प्रकार, हम एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर होंगे जहाँ हर नागरिक के पास अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने का अवसर होगा।

हम इस बात को समझते हैं कि गरीबी एक जटिल समस्या है जिसका समाधान एक क्षेत्र में कार्य करने से नहीं, अपितु एक समन्वित और समग्र दृष्टिकोण से ही हो सकता है। इसलिए हमारी श्रृंखला विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के विचारों और अनुभवों को साझा करेगी, और शोध-आधारित विचारों को आगे लायेगी, जिससे नवाचार और सुधार के लिए प्रेरणा मिल सके। अंत में, हम आशा करते हैं कि यह श्रृंखला न केवल जागरूकता बढ़ाएगी बल्कि समाज और सरकारों को उन नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी जो वास्तव में गरीबी को कम करने और हमारे देश को एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होंगे।

–अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय, (इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

खोया पाया की समीक्षा, पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना से राम जल सेतु तक



रामपाल जाट

‘भाखड़ा मेनैजमेंट बोर्ड’ में पंजाब तथा हरियाणा के एक-एक सदस्य हैं किंतु राजस्थान का कोई सदस्य नहीं है। जबकि राजस्थान इसके लिए निरंतर प्रयासरत है। हरिके बैराज पर नियंत्रण नहीं होने से राजस्थान की भागीदारी के पानी में भी अनेक बार कटौती की जाती है। ‘इंदिरा गांधी नहर परियोजना’ में 8.6 एमएफ़ पानी में से राजस्थान को 7.59 एमएफ़ पानी ही प्राप्त हो रहा है। राजस्थान की भागीदारी का 0.6 एमएफ़ पानी नहीं प्राप्त नहीं हो रहा है। इसके अतिरिक्त जब भी पानी की आवक में कमी होती है तो हरिके बैराज पर पंजाब का नियंत्रण होने से राजस्थान की भागीदारी का पानी कम कर दिया जाता है। राजस्थान निचले भाग (डाउनस्ट्रीम) में होने से सदैव ही पानी प्राप्त करने में घाटे में रहता है। इसी प्रकार नोहर सिद्धमुख नहर से 0.47 एमएफ़ पानी प्राप्त होना था किंतु उसमें से 0.30 एमएफ़ पानी ही प्राप्त हो रहा है एवं 0.17 एमएफ़ हरियाणा ने रोक रखा है। परिणामतः राजस्थान के नोहर, भादरा एवं सिद्धमुख क्षेत्र को पानी की आपूर्ति से वंचित रहना पड़ता है।

राजस्थान एवं हरियाणा के मध्य यमुना जल हथिनी कुंड पर 577 तथा ओखला हेड पर 386 मिलियन घन मीटर पानी राजस्थान की भागीदारी में आया था किंतु 30 वर्ष उपरांत भी अभी तक यह पानी भी राजस्थान को प्राप्त नहीं हुआ है। गुडगांव नहर की क्षमता में बढ़ोतरी का समझौते का ज्ञापन-अनुबंध (एमओयूर) होने पर हरियाणा ने अभी तक अपनी सहमति व्यक्त नहीं की है। इसी प्रकार राजस्थान और हरियाणा तथा भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के मध्य 17 फरवरी 2024 को यमुना जल के वितरण के लिए हथिनी कुंड पर 577 मिलियन घन मीटर पानी ताजेवाला हेड से भूमिगत पाइपलाइन द्वारा चुरे, झुझरू एवं अन्य जिलों को सिंचाई –पेयजल का पानी जुलाई से अक्टूबर की अवधि में देने का एमओयू होने के उपरांत भी हरियाणा ने यमुना बेसिन में तीन स्थान रेणुकाजी, लखवार एवं किशु पर पानी के संग्रहण की व्यवस्था कर ली है।

बांसवाड़ा जिले में स्थित माही बांध में गुजरात की 40 प्रतिशत तथा राजस्थान की

से लेकर 2024 तक की अवधि में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री के कारण इस समझौते को शून्य करने की कार्यवाही राजस्थान की जनता को सदैव चुभती रहेगी। राजस्थान की जनता इस प्रकार की जनहित की बलि देने जैसी कार्यवाही करने वालों को कभी क्षमा नहीं करेगी। राजस्थान का नियंत्रण एवं संचालन में बाधा उत्पन्न करने तथा राजस्थान को प्राप्त होने वाले पानी की मात्रा को कम करना राजस्थान की जनता के साथ अन्याय है।

पार्वती-कालीसिंध चम्बल लिंक परियोजना पर तैयार नये प्रारूप में इस परियोजना में कुलू बेसिन के पानी को राजस्थान में अटककर मध्य प्रदेश को दे दिया गया है। इसके बदले में पार्वती नदी से पानी लिया जाना प्रस्तावित है। मध्यप्रदेश एव राजस्थान के लिए कुलू और पार्वती से पानी प्राप्ति हेतु 75 प्रतिशत निर्भरता का प्रावधान किया गया है। इससे 50 प्रतिशत निर्भरता का अपेक्षा प्राप्त पानी की मात्रा आधी रहेगी। क्योंकि 50 प्रतिशत निर्भरता के अनुसार 4 वर्ष में से 2 वर्ष पानी का संठाहण किया जा सकता है। जबकि 75 प्रतिशत निर्भरता के अनुसार 4 वर्ष में से 1 वर्ष ही पानी का संग्रहण किया जाएगा। कुलू नदी का पूर्ण पानी मध्यप्रदेश को प्राप्त होगा जबकि पार्वती नदी में दोनों प्रदेशों की भागीदारी होने एवं मध्य प्रदेश के ऊपरी बेसिन (अप स्ट्रीम) होने के कारण राजस्थान को प्राप्त होने वाले पानी की कटौती की सम्भावना बनी रहेगी। वैसे भी पार्वती नदी पर मध्य प्रदेश सात से अधिक परियोजनाएँ तैयार कर चुका है। इनमें सोनचिरी, रामवास, बकोरा, पटुनिया, सेवरखेड़ी, सेकरी एवं सुल्तानपुर आदिहै। राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के बीच किया गया समझौता ज्ञापन-अनुबंध (एमओए) समानता पर आधारित नहीं होने के कारण न्याय संगत नहीं है। मध्य प्रदेश में काली सिंध नदी पर 2013-14 से 2018-19 तक मोहनपुरा एवं कुंडालिया बांध बना लिए थे। अब पार्वती नदी पर पातनपुर बांध का निर्माण कार्य चल रहा है। इन बांधों के द्वारा 1100 मिलियन घन मीटर पानी तो मध्य प्रदेश ने पहले ही सुरक्षित कर लिया। इसे सम्मिलित करने पर मध्य प्रदेश को प्राप्त होने वाले पानी की मात्रा 4,742 मिलियन घन मीटर है। जबकि राजस्थान में उपयोग होने वाले पानी की मात्रा 3405 मिलियन घन मीटर है अर्थात् 1337 मिलियन घन मीटर पानी मध्य प्रदेश को अधिक आवंटित किया गया है। इस परियोजना के पानी की गणना में पुनर्स्क्रिप्त 522 मिलियन घन मीटर पानी को जोड़ना कल्पनावलम्बित होने से रोकक तथ्य है। कल्पना के आधार पर देश में ही नहीं बल्कि विश्व में भी एसी प्रणाली अब तक धरातल पर नहीं उतरी है।

मध्य प्रदेश में कुंडालिया तथा मोहनपुरा बांधों का कार्य वर्ष 2018-19 तक 5 वर्षों में पूरा कर लिया गया था। जबकि मूल ‘पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना’ का विस्तृत परियोजना प्रतियेदन (डीपीआर) तैयार किया था। देश के प्रधानमंत्री की धारणा के अनुसार पानी का महत्व राजस्थान से अधिक कोई नहीं जानता। इसलिए जलशक्ति मंत्रालय की कमान राजस्थान को सौंपी गयी थी। वर्ष 2019

से लेकर 2024 तक की अवधि में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री के कारण इस समझौते को शून्य करने की कार्यवाही राजस्थान की जनता को सदैव चुभती रहेगी। राजस्थान की जनता इस प्रकार की जनहित की बलि देने जैसी कार्यवाही करने वालों को कभी क्षमा नहीं करेगी। राजस्थान का नियंत्रण एवं संचालन में बाधा उत्पन्न करने तथा राजस्थान को प्राप्त होने वाले पानी की मात्रा को कम करना राजस्थान की जनता के साथ अन्याय है।

‘शिक्षक की हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है’

संबंधित करने हुए कहा कि शिक्षक ही हैं बालिकाओं ने सबसे अहम गुरु होते हैं, जो हमें भविष्य में सही रास्ता दिखाने, मार्गदर्शन करने व जीवन में कुछ बड़ा करने के लिए हमेशा प्रेरित करते हैं। शिक्षक हमारे लिए किसी भागवान से काम नहीं होते हैं। शिक्षक की हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पूर्वांचल जन चेतना समिति के संस्थापक अध्यक्ष रजनीश वर्मा ने संस्था के बारे में जवाहर फाउंडेशन द्वारा सामाजिक सरोकार के तहत किया जा रहे हैं कार्यों के बारे में भी बताया साथ ही कहा कि पूर्वांचल जन चेतना समिति यूनेस्को के साथ मिलकर शिक्षा के क्षेत्र में नया आयाम स्थापित करेगी। समारोह में मणी एजुकेशन सोसायटी की सचिव अनुराधा झा के नेतृत्व में संस्कृतिक

कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। जिसमें कई बालिकाओं ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों ने उपस्थित श्रोताओं की मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर जिला यूनेस्को एसोसिएशन के कार्यकारी अध्यक्षदिनेश जैन, सचिव जगदीशचंद्र मुंड़ड़ा, कोषाध्यक्ष विजाली विजयवर्मा, संगठन मंत्री कमलेश जादवू, मणी एजुकेशन सोसाइटी के ऋषि राज, मीडिया प्रभारी बुजेश शर्मा, वैभव जोशी, शिक्षक और शिक्षिकाये व संस्थाओं के सभी पदाधिकारी सदस्य भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन यूनेस्को की प्रवक्ता मधु लोढ़ा ने किया।

	मेघ आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यक्तिगत सफलता से मनोबल बढ़ेगा।
	वृष अपने अति आवश्यक कार्यों के कार्यात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।
	मिथुन नवीन कार्यों के आशय में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।
	कर्क चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।
	सिंह परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।
	कन्या विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। पारिवारिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।
	तुला परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।
	वृश्चिक घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों में अरुि परेशानियां दूर होने लगेंगी।

मीटर के अलवर के सरिस्का की पहाड़ियों में कृत्रिम बांध की प्रस्तावना सम्मिलित करा दी। आश्चर्य तो यह है कि चाहत के अनुसार पुराने बांध अस्तित्व में नहीं होने पर भी नये बांध प्रस्तावित कर दिये गये। ऐसी स्थिति का राज्य के मुखिया भी क्यों पीछे रहते, उन्होंने भी परियोजना में सम्मिलित बंध बंटेरा से आगे पानी ले जाने के लिए ‘सुजान गंगा-भरतपुर लिंक’ को जुड़वा दिया। इनके लिए बजट 2024-25 में घोषणा कर दी गई और उसी की अनुपालना में 18 फरवरी 2025 को टेंडर भी कर दिए गए। इसके अतिरिक्त विकास के नाम पर परियोजना के मार्ग में आने वाले 158 छोटे तालाबों की सूक्ष्म सिंचाई विकास परियोजना प्रस्तावित कर दी गई है। पानी की पर्याप्त सुनिश्चित उपलब्धता के परीक्षण के उपरांत इस प्रकार की योजनाएँ स्वागत योग्य होती है किन्तु पानी की उपलब्धता की घटने के बाद भी जनप्रतिनिधियों द्वारा परियोजना के मूलस्वरूप को बिगाड़ना उचित नहीं कहा जा सकता।

यह राजस्थान के प्रत्येक नागरिक की सदृच्छा है कि उसके ‘खेत को पानी’ मिले। इसमें कोई असहमत नहीं हो सकता। इसके लिए अधिकाधिक सिंचाई परियोजनाओं की आवश्यकता है। उनके लिए पानी की आवश्यकता ‘सिंधु जल समझौते’ को निरस्त कर भी पूर्ण की जा सकती है। पूर्व में हुए समझौतों की पालना से इसे संभव किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के विस्तृत भूभाग के वर्षा जल का संग्रहण कर भी ‘खेत को पानी’ उपलब्ध करया जा सकता है। इस कठिन कार्य को सरल बनाने के लिए ही जन प्रतिनिधियों, मंत्रियों एवं सरकारों की प्रासंगिकता है। केन्द्रीय मंत्री, राजस्थान सरकार के धरातल पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के मुखिया पर उठारने में हो रही है। ऐसे जन प्रतिनिधि-मंत्रीण सिंधधान को तो पानी प्राप्त करने के उपरांत परियोजनाएँ बनाने की आशा एवं आकांक्षा जन सामान्य को रहती है। ये सभी इस कठिन कार्य से बचते हुए तैयार भोजन को ग्रहण करने में तत्परता ही नहीं दिखा रहे हैं बल्कि पानी प्राप्ति के